केन्द्रनाम - भारतीयज्ञानपरम्पराकेन्द्रम्, सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वाराणसी

पञ्जिकासंख्या – AICTE/IKS/CENTER-१/२०२१-२२/०११

प्रधानगवेषक(PI)नाम - डॉ. ज्ञानेन्द्र सापकोटा

अनुसन्धानस्य मुख्यक्षेत्रम् – शिल्पशास्त्रं कला च

अनुसन्धानोपलब्धिः

सम्पाद्यमानपाण्डुलिपिग्रन्थाः

	ग्रन्थः	पाण्डुलिपिसंख्या
1.	पाकावली -	11
2.	अगस्तिमतम् -	3
3.	रत्नपरीक्षा गुर्जरटीका-	1
4.	चयनप्रयोगः-	3
5.	शतरुद्रियहोमः-	3
6.	चयनविहारकारिका-	1
7.	इष्टकापूरणम् - सूत्रम्	9
8.	इष्टकापूरणम् - कर्कभाष्यम्	3
9.	इष्टकापूरणम् - देवपद्धतिः	3
10.	शुल्बसूत्रम्	1

शोधपत्रम्

- चतुर्थ-विश्व-वेद-विज्ञानसम्मेलनकार्यक्रमे "सुपर्णचिताविष्टकाचयनं कातीयम्" इत्यस्मिन् विषये शोधलेखस्य चयनं जातम्।
- यस्य मौखिकप्रस्तुतिः कार्यक्रमस्य द्वितीयदिवसे २३/१२/२०२४ तमे दिनाङ्के सञ्जाता।
- अस्य सारांशिका विस्तृतलेखश्च चतुर्थ-विश्व-वेद-विज्ञानसम्मेलनेन प्रकाश्यमानायां पत्रिकायां प्रकाशनाय दत्तः अस्ति।

उद्देश्यम्

- शिल्पशास्त्रग्रन्थानां सार्वजनिकता
- शिल्पकला तथान्यकलानां भारतीयाध्ययनपरम्परायाः पुनः स्थापनम्
- शिल्पशास्त्रमेव समेषां कलाग्रन्थानां विवरणसहितः संग्रहः।

परियोजनाप्रभावः परिणामश्च

परियोजनाप्रभावः

- तत्तत्काले प्रकाशितानां शुल्बशास्त्रीयग्रन्थानां सङ्ग्रहेणानेकटीकाः प्राप्स्यन्ते।
- तेषां टीकाग्रन्थानामध्ययनेनास्मिन् विषये मतवैभिन्यं गाणितिकभिन्नसिद्धान्ताश्च ज्ञास्यन्ते।
- विभिन्नसिद्धान्तानुसारं गणिताधारितनूतना विचाराः मिलिष्यन्ति।

परियोजनापरिणामः

- भिन्नभिन्नस्थानेषु विद्यमानानां शुल्बशास्त्रीयग्रन्थानामेकत्रैव प्राप्तिः गणितरसिकानां सामान्यजनानाञ्च कृते महल्लाभाय भविष्यति।
- शुल्बशास्त्ररूपा भारतीयज्ञानस्य महोदधिः सङ्ग्रहाच्चास्माल्लप्स्यते।
- शुल्बशास्त्रीयसूत्राणां मतवैभिन्यज्ञानात् नूतनसिद्धान्ताः ज्ञास्यन्ते।
- अप्रकाशितस्यानुलेखनसम्पादनपूर्वकं प्रकाशनं भारतीयज्ञाने नाविन्यमानयिष्यति।

कार्यप्रणाली

- शैक्षणिक समीक्षा एवं वित्तीय नियन्त्रण व्यवस्था
- पाण्डुलिपि सम्पादन आदि
- सूचीकरण
- प्रयोगविधि
- आयोजन

शिक्षा एवं मार्गदर्शनम्

- प्रशिक्षुयोजना

  १. प्रशिक्षितप्रशिक्षुसंख्या – २०

  २. प्रशिक्षणकाल: - मासत्रयम्

- प्रशिक्षणकार्यक्रम:

  १. भारतीयखेल-कबड्डीप्रशिक्षणकार्यक्रम:

  प्रशिक्षितगुरुकुलसंख्या – १०

  प्रशिक्षितछात्रसंख्य़ा – ५००

  प्रशिक्षणकाल: – १० दिवसा:

  २. भारतीयखेल-गुल्लीडण्डाप्रशिक्षणकार्यक्रम:

  प्रशिक्षितगुरुकुलसंख्या – १०

  प्रशिक्षितछात्रसंख्य़ा – ५००

  प्रशिक्षणकाल: – १० दिवसा:

- शिल्पकलाव्याख्यानमाला/कार्यशाला

  १. व्याख्यानमाला/कार्यशालासंख्या – १७

  २. प्रतिव्याख्यानमाला/कार्यशालोपस्थितछात्रसंख्या - ३०

केन्द्रेण आयोजिताः कार्यक्रमाः

चितिप्रदर्शनी

दिनाङ्कः – २८/०४/२०२४

प्रपत्रम् - [C:\Users\jnane\OneDrive\Desktop\चिति प्रदर्शनी\चितिप्रदर्शनी.pdf]

प्रो. रामपूजन पाण्डेय केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय की सम्बद्ध संस्था झारखंड में प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष नामित

परफेक्ट मिशन

वाराणसी । सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के न्याय-वैशेषिक विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो रामपूजन पाण्डेय केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,नई दिल्ली के द्वारा लक्ष्मी देवी ऑफ आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, हरिशरणम कुटीर, देवघर, झारखंड के प्रबंध समिति के अध्यक्ष के रूप में नामित किया गया है।

इस आशय का पत्र केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलसचिव के द्वारा प्रेषित पत्र प्राप्त होने पर उक्त सूचना से विश्वविद्यालय परिवार में हर्ष व्याप्त है। ज्ञातव्य हो कि प्रो पाण्डेय का अध्यक्ष/चेयरमैन पद 3 वर्ष का कार्यकाल होगा।यह दायित्व मानद है जो कि केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति से सीधे जुड़े रहेंगे।प्रो पाण्डेय के अध्यक्ष पद नियुक्ति की सूचना से इस प्रतिष्ठित संस्थान के कुलपति प्रो बिहारी लाल शर्मा ने, उन्हें हार्दिक बधाई देते हुए कहा कि यह क्षण हम लोगों के लिए गौरव की बात है यह मील का पत्थर उनके शानदार करियर में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, उनकी विद्वता एवं प्रबन्ध कौशल को देखते हुए ही केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति ने महाविद्यालय के सर्वविध हित को देखते हुए ही उनको यह महनीय दायित्व दिया है। उनके द्वारा देवघर में उक्त संस्थान का नेतृत्व करने पर गर्व है। अपने दूरदर्शी नेतृत्व, प्रबन्ध कौशल , विषय-विशेषज्ञता और अटूट समर्पण के साथ, मुझे विश्वास है कि वे उक्त संस्थान को उत्कृष्टता की अभूतपूर्व ऊंचाइयों पर ले जाएंगे। उनके कार्यकाल को सभी के लिए उल्लेखनीय सफलता, नवाचार और समृद्धि से चिह्नित किया जा सकेगा।

बधाई देने वालों में कुलसचिव राकेश कुमार, प्रो रामकिशोर त्रिपाठी, प्रो जितेन्द्र कुमार, प्रो सुधाकर मिश्र, प्रो हीरक कांत, प्रो हरिशंकर पाण्डेय, प्रो अमित कुमार शुक्ल, प्रो विजय कुमार पाण्डेय, प्रो दिनेश कुमार गर्ग आदि रहे।

वीटा-दण्डप्रतियोगिता

प्रपत्रम् -D:\GULLI DANDA\गुल्ली डण्डा प्रतिवेदनम्.pdf

दिनाङ्कः – २७/०७/२०२४

देसी खेल को बढ़ावा

संस्कृत विश्वविद्यालय में छात्रों ने दिखाए गिल्ली-डंडा में सधे हाथ

अभिलक्ष्य दंड प्रहाराय उद्यतः सन्ति...

यानी... निशाना लगाकर डंडे से प्रहार करने को खिलाड़ी तैयार है। संस्कृत छात्र आशीष मणि त्रिपाठी ने पूरे मैच की संस्कृत में कमेंटरी भी की। दीक्षांत मंडप में मैच देखने वालों की भीड़ रही। हर टाड़ पर दर्शक तालियां बजाकर खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाते रहे। आयोजन डॉ. विजय शर्मा और डॉ. ज्ञानेंद्र सांपकोटा की देखरेख में हुआ। इन्होंने रेफरी की भूमिका भी निभाई।

वाराणसी, वरिष्ठ संवाददाता। 'हमारे अंग्रेजी दोस्त मानें या न मानें मैं तो यही कहूंगा कि गिल्ली-डंडा सब खेलों का राजा है...' कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की कालजयी रचना 'गिल्ली-डंडा' की यह पहली लाइन है। मुंशी जी की जयंती 31 जुलाई से चार दिन पहले संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में शनिवार को उनके लिखे शब्द जीवंत हो उठे। संस्कृत छात्रों ने देशी खेल में सधे हाथ दिखाए, जब गुच्ची से उछली हुई गिल्ली ने सौ गज का सफर किया।

विश्वविद्यालय के भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र की तरफ से शनिवार को गिल्ली-डंडा स्पर्धा का आयोजन हुआ। काशी में किसी संस्था की तरफ से पहली बार इस खेल का आयोजन कराया गया। प्रतियोगिता में कुल चार टीमें शामिल हुईं। इनमें संस्कृत विश्वविद्यालय, स्वामी वेदांती वेद विद्यापीठ, स्वामी नारायणानन्दतीर्थ वेद विद्यालय और श्रीविश्वेश्वरवेद भवनम् की टीमें थीं।

शुभारंभ करते हुए कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने परंपरागत खेलों को बढ़ावा देने की सराहना की। मैच के बाद कुलपति ने विजेता टीम को शील्ड और प्रमाणपत्र प्रदान किया। मैन ऑफ द मैच स्वामीवेदांती वेद विद्यापीठ के रुद्र पाण्डेय को चुना गया। उन्हें गिल्ली-डंडा पुरस्कार में दिया गया। डॉ. विजय शर्मा ने धन्यवाद दिया। प्रो. अमित शुक्ल, प्रो. महेंद्र पांडेय, प्रो. जितेंद्र कुमार साही, प्रो. शैलेश मिश्र, प्रो. सुधाकर मिश्र, डॉ. दुर्गेश पाठक, डॉ. मधुसूदन मिश्र, डॉ. विजेंद्र आर्य, अखिलेश मिश्र, सुशील तिवारी, आदित्य कुमार, पीयूष मिश्र मौजूद थे।

संस्कृत विश्वविद्यालय में गिल्ली-डंडा मैच के दौरान गिल्ली उछालकर टांड़ लगाने का प्रयास करता खिलाड़ी। • हिन्दुस्तान

क्रिकेट जैसा है गिल्ली-डंडा का खेल

गिल्ली-डंडा का खेल काफी कुछ क्रिकेट जैसा ही है। इसे देसी क्रिकेट भी कहा जाता है। इसमें रनों की जगह डंडा का स्कोर होता है। यानी खिलाड़ी की मारी हुई गिल्ली कितनी दूर जाकर गिरी, इसे मारने वाले डंडे से नापा जाता है। क्रिकेट में गेंद को शॉट मारी जाती है जबकि देसी क्रिकेट में गिल्ली को टांड़ लगाई जाती है। हवा में उड़ती गिल्ली कैच करने पर खेलने वाला आउट करार दिया जाता है।

बटुकों ने खेला गुल्ली-डंडा, संस्कृत में कमेंट्री

खेल

✡ संस्कृत विश्वविद्यालय के मैदान में खेल का आयोजन, धोती-कुर्ता पहने स्टूडेंट्स ने लगाए हवाई शॉट

भारत एकता टाइम्स/वाराणसी

संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में महाभारत काल का खेल विटी-दांडू या गिल्ली-डंडा खेला गया। कहीं-कहीं गांवों में अभी भी होता है, लेकिन, भारत में पहली बार किसी विश्वविद्यालय में ये पौराणिक गेम खेला गया। इससे पहले, महाभारत काल के गुरुकुलों में ही इस गेम को खेला जाता था। शनिवार को संपूर्णानंद विश्वविद्यालय के दीक्षांत लॉन में 4 टीमों के बीच यह खेल खेला गया। वेद पाठी, धर्म विज्ञान और संस्कृत के स्टूडेंट्स ने धोती- गंजी और कुर्ता पहनकर गिल्ली पर खूब हवाई शॉट जड़े। गड्ढे में पड़ी गिल्ली के एक कॉर्नर पर जैसे ही डंडे का वार हो रहा, वैसे

गिल्लियों के हर वार पर मैदान में बजीं तालियां

संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के दीक्षांत लॉन में इसे देखने के लिए लोग उमड़े। गिल्लियों के हर वार पर मैदान तालियों की गड़गड़ाहट से गूंजा। बेलनाकार गिल्ली पर दंड पड़ते ही हवा में 3 फीट हवा में उछल जा रही थी, इसके बाद खिलाड़ी इस गिल्ली को दूसरे वार में 50 से 100 फीट दूरी तक पहुंचा रहे थे।

ही गिल्ली हवा में 3 फीट तक उछल जा रही और उसके बाद खिलाड़ी उसे 50 से 100 फीट दूर तक पहुंचा दे रहे हैं। दूसरी ओर, मैच रेफरी भी धोती-कुर्ता में थे और संस्कृत में लाइव कमेंट्री भी चली।

संपूर्णानंद ने वेदांती पीठ को हराया- संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय की टीम ने स्वामी वेदांती वेद पीठ को हराकर गिल्ली डंडे का गेम जीत लिया है। जीतने वाली टीम ने 185 डंडे का स्कोर खड़ा किया था। जवाब में वेदांती पाठ की टीम महज 83 डंडे का ही स्कोर बना पाई। इनके 5 खिलाड़ियों का स्कोर जीरो रहा।

विजेता टीम ने कहा कि उन्होंने कभी भी प्रोफेशनवेली इस गेम को नहीं खेला है। पहली बार है कि जब विश्वविद्यालय स्तर पर गेम हो रहा है। खिलाड़ियों ने बताया कि उनका बैकग्राउंड देहात का है, [illegible] में गिल्ली डंडे का खेल [illegible] इसलिए, उन्हें इस गे[illegible] कोई दिक्कत नहीं आ[illegible]

अस्याम विटी-दांडू क्रीणायाम अति आनंदः समायति...

अस्याम विटी-दांडू क्रीणायाम अति आनंद: समायति...यानी कि ये गिल्ली-डंडे का खेल दिल को बेहद खुश करने वाला है। इसका अनुभव काफी यूनिक है। कमेंटेटर डॉ. आशीष मणि त्रिपाठी ने बिजली कट जाने के बाद भी अपनी संस्कृत में कमेंट्री जारी रखी।

8

खेल से समर्पण, अनुशासन, निष्ठा और आत्मविश्वास की होती है वृद्धि-प्रोफेसर बिहारी लाल शर्मा

भारतीय ज्ञान परंपरा (आईकेएस) द्वारा आयोजित गिल्ली-डंडा प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने उत्साह और समर्पण के साथ भाग लिया। इस पारंपरिक खेल के माध्यम से विद्यार्थियों में अनुशासन, निष्ठा और आत्मविश्वास की वृद्धि हुई। साथ ही, सामंजस्य और सम्मान की भावना भी विकसित हुई। उक्त विचार सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, के वाइस चांसलर प्रोफेसर बिहारी लाल शर्मा ने भारतीय ज्ञान परंपरा (आईकेएस) द्वारा आयोजित गिल्ली-डंडा प्रतियोगिता के अंतर्गत पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान सभी प्रतियोगियों को संबोधित कर व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि युवा पीढ़ी को अपनी संस्कृति और परम्परा से जोड़ने में मदद मिलेगी। गिल्ली-डंडा जैसे खेल न केवल शारीरिक स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद हैं, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य और टीम वर्क के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। प्रतियोगिता के समन्वयक डॉक्टर ज्ञानेन्द्र सांपकोटा, सह संयोजक डॉक्टर विजय कुमार शर्मा एवं निर्णायक डॉक्टर दुर्गेश पाठक ने नेतृत्व किया। जिसमें प्रथम विजेता टीम सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी रही। वहीं द्वितीय विजेता टीम श्रीस्वामी वेदांती वेद रही। तृतीय विजेता टीम श्री स्वामी नारायणानंद तीर्थ वेद विद्यालय एवं श्री विश्वेश्वर वेद भवन रहा। इस अवसर पर प्रोफेसर हरिप्रसाद अधिकारी, डॉक्टर विजय कुमार शर्मा एवं डॉक्टर ज्ञानेन्द्र सांपकोटा, निर्णायक डॉक्टर दुर्गेश पाठक आदि उपस्थित रहे।

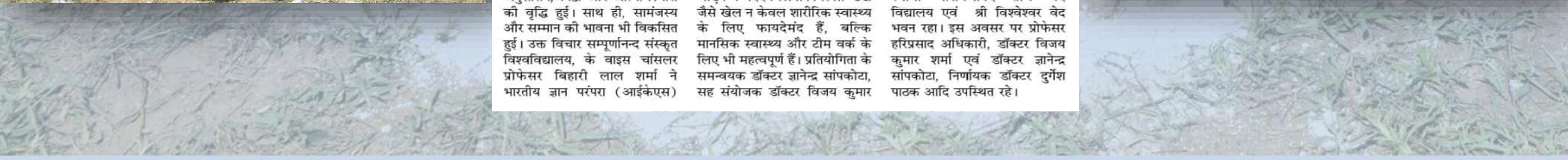

कबड्डी-प्रतियोगिता

दिनाङ्कः – २३/०८/२०२४

प्रपत्रम् - D:\कबड्डी\कबड्डी प्रतिवेदनम्.pdf

संस्कृत में कमेंट्री ने चुराया आकर्षण

प्रोत्साहन

कबड्डी प्रतियोगिता में छह टीमों ने की जोर आजमाइश

संपूर्णानंद में हुई स्पर्धा में स्वामी वेदांती विद्यापीठ प्रथम

वाराणसी। आधुनिकता के इस दौर में शारीरिक स्वास्थ व मानसिक विकास ही सफलता है। खेल व्यक्तिगत और सामाजिक कौशल के विकास के लिए उत्प्रेरक का कार्य करती है। इसे ही ध्यान रखकर भारतीय खेलों को प्रोत्साहन देने के लिए शिक्षा मंत्रालय के प्रकल्प भारतीय ज्ञान परंपरा के केंद्र संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, में शुक्रवार को स्नातक स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में छह टीमों ने प्रतिभाग किया। इस दौरान देववाणी संस्कृत में की जा रही कमेंट्री आकर्षण का केंद्र बनी रही।

आईकेएस के मुख्य समन्वयक प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी की अध्यक्षता व कुलसचिव राकेश कुमार की विशिष्ट आतिथ्य में प्रतियोगिता सुबह सात बजे शुरू हुई, जिसमें डा. ज्ञानेंद्र सापकोटा संयोजक एवं डॉ. विजय कुमार शर्मा सह संयोजक रहे। प्रतियोगिता में छह टीमों ने भाग लिया। हर टीम में आठ खिलाड़ी थे। इसमें स्वामी वेदांती वेद विद्यापीठ, स्वामी नारायणानंद तीर्थ वेद विद्यालय, इंटरनेशनल चंद्रमौली चैरिटेबल ट्रस्ट, विश्वेश्वरवेद भवनम, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय व वेदविद्यानिधी की टीम ने प्रतिभाग किया।खेल का प्रारंभ स्वामी वेदांती वेद विद्यापीठ तथा स्वामी स्वामी नारायणानंद तीर्थ वेद विद्यालय के मध्य हुआ। स्वामी नारायणानंद तीर्थ वेद विद्यालय की टीम ने टॉस जीता। प्रथम मैच के प्रथम क्रम में दोनों टीमों ने समान अंक प्राप्त किया, प्रथम क्रम के समापन के बाद दोनो टीमों ने पक्षों का आदान प्रदान किया तथा इसके साथ ही द्वितीय क्रम का प्रारंभ हुआ। द्वितीय क्रम में स्वामी वेदांती वेद विद्यापीठ तीन अंकों से विजयी रहा।

दूसरा मैच विश्वेश्वर वेद भवनम तथा संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के मध्य हुआ। विश्वेश्वर वेद भवनम की टीम ने टॉस जीता। प्रथम क्रम में विश्वेश्वर वेद भवनम की टीम ने जीत हासिल की। इस पारी के द्वितीय क्रम में भी विश्वेश्वर वेद भवनम ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए जीत दर्ज की।

तीसरा मैच इंटरनेशनल चंद्रमौली चैरिटेबल ट्रस्ट तथा वेद विद्यानिधि के मध्य हुआ। वेद विद्यानिधि की टीम ने टॉस जीतकर आक्रमणकारी को बुलाने का निर्णय किया। प्रथम क्रम में दोनों टीमों ने बेहतर प्रदर्शन करते हुए 14-14 समान अंक अर्जित किए तथा दूसरे क्रम के लिए पक्षों का परिवर्तन किया। दूसरे क्रम में वेद विद्यानिधि की टीम ने 24अंक से जीत हासिल की। तीनों मैचों के समापन के बाद स्वामी वेदांती वेद विद्यापीठ, विश्वेश्वर वेद भवनम, स्वामी नारायणानंद तीर्थ वेद विद्यालय तथा संपूर्णानंद की टीम सेमीफाइनल में गई। फाईनल मैच स्वामी वेदांती वेद विद्यापीठ तथा विश्वेश्वर वेद भवनम के मध्य हुआ, जिसमें वेदांती वेद विद्यापीठ सर्वाधिक 24 अंक प्राप्त करके प्रथम विजेता तथा विश्वेश्वर वेद भवनम 19 अंक अर्जित करने के साथ ही द्वितीय विजेता रही। तृतीय विजेता नारायणानंद तीर्थ वेद विद्यालय की टीम रही तथा चतुर्थ विजेता संपूर्णानंद की टीम रही। खेल उद्घोषक डा. आशीष मणि त्रिपाठी तथा दवे अल्पेश पंकजभाई ने संपूर्ण खेल की कमेंट्री संस्कृत भाषा में की। निर्णायक की भूमिका डा. जयंतपति त्रिपाठी तथा डा. दुर्गेश पाठक ने निभाई। कार्यक्रम के अध्यक्ष मुख्य अतिथि आइकेएस के समन्वयक प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी व कुलसचिव राकेश कुमार ने प्रथम विजेता टीम को शील्ड एवं प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया। द्वितीय व तृतीय टीम को भी प्रमाणपत्र तथा चतुर्थ टीम को सांत्वना पुरस्कार के रूप में प्रमाणपत्र प्रदान किया गया।

संपूर्णानंद में गूंजा, अनेन क्रीडकेन अपर : क्रीडक : गृहीत :

स्पोर्ट्स लाइव

- स्नातक स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता की संस्कृत भाषा में हुई कमेंट्री
- फाइनल में 24 अंक हासिल कर वेदांती वेद विद्यापीठ टीम विजेता

संस्कृत विवि में कबड्डी प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते शास्त्री के विद्यार्थी • जागरण

जागरण संवाददाता, वाराणसी : संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय का दीक्षा प्रांगण शुक्रवार को कबड्डी-कबड्डी से गूंजता रहा। शरीर पर गमछा व जनेऊ धारण किए शास्त्री के विद्यार्थी अनेन क्रीडकेन अपरः क्रीडकः गृहीतः (पकड़-पकड़ लिया) चिल्लाते देखे गए। वहीं दर्शक दीर्घा से भी बीच-बीच में कमेंटेटर की आवाज आ रही थी - (सत्यम् पश्य पश्य महदाश्चर्यं महदाश्चर्यम् अयं क्रीडकः अतीव विलक्षणं क्रीडति) अरे, देखो-देखो सत्यम कितना विलक्षण खेल रहा है।

संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा परंपरागत खेलों के साथ ही संस्कृत और खेलों की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए शुक्रवार को स्नातक स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता का शुभारंभ कुलसचिव राकेश कुमार ने किया। इसके बाद टास जीतने वाली स्वामी वेदांती वेद विद्यापीठ तथा स्वामी नारायणानंद तीर्थ वेद विद्यालय के बीच प्रतियोगिता शुरू हुई। प्रथम चक्र में दोनों टीमों को एक समान अंक मिला। वहीं, द्वितीय क्रम में स्वामी वेदांती वेद विद्यापीठ तीन अंकों से विजयी हुआ। दूसरा मैच विश्वेश्वर वेद भवनम् व संस्कृत विश्वविद्यालय के बीच हुआ। इसमें विश्वेश्वर वेद भवनम् की टीम विजयी रही। तीसरा मैच इंटरनेशनल चंद्रमौली चैरिटेबल ट्रस्ट तथा वेद विद्यानिधि के मध्य हुआ। वहीं, दूसरे क्रम में वेद विद्यानिधि की टीम ने 24 अंक से जीत हासिल की। वहीं फाइनल मैच स्वामी वेदांती वेद विद्यापीठ तथा विश्वेश्वर वेद भवनम् के बीच हुआ। फाइनल में 24 अंक हासिल करने वाली वेदांती वेद विद्यापीठ की टीम को विजेता घोषित किया गया। जबकि विश्वेश्वर वेद भवनम् की टीम 19 अंक लेकर दूसरे स्थान पर रही। इस दौरान खेल उद्घोषक डा. आशीष मणि त्रिपाठी व दवे अल्पेश पंकज भाई ने संपूर्ण कबड्डी के खेल की संस्कृत में कमेंट्री कर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

वीटा-दण्ड आयोजनस्य अखिलभारतीयप्रतियोगितायां प्रथमस्थानम्

- Official Website khel winners name link - https://bharatiyakhel.in/winners-of-bharatiya-khel/
- Youtube video link - https://youtu.be/1e2DWF0hj44?si=QgHPL0Y41XxrmwgA

कबड्डी आयोजनस्य अखिलभारतीयप्रतियोगितायां प्रथमस्थानम्

- Official Website khel winners name link - https://bharatiyakhel.in/winners-of-bharatiya-khel/
- Youtube video link - https://youtu.be/-rPx3v5Ro7c?si=TKpwk1su_NY7Twu6

संस्थान्तरेण सह सम्मिल्य आयोजिताः कार्यक्रमाः

कविसम्मेलनम्

दिनाङ्क – २४/०३/२०२३

अष्टावधानम्

दिनाङ्क – 25/03/2023

विश्ववेदविज्ञानसम्मेलने प्रतिभागः

दिनाङ्कः – २३/१२/२०२४ तः २५/१२/२०२४

प्रपत्रम् - [C:\Users\jnane\OneDrive\Desktop\VVVS 2024\vvvs प्रतिवेदनम्.pdf]

श्रौतसम्मेलनम्

दिनाङ्कः – २९/०१/२०२५ तः ०२/०२/२०२५

प्रपत्रम् -
D:\श्रौतसम्मेलनम् - 2025\श्रौतसम्मेलनम् - 2025 प्रतिवेदनम्.pdf

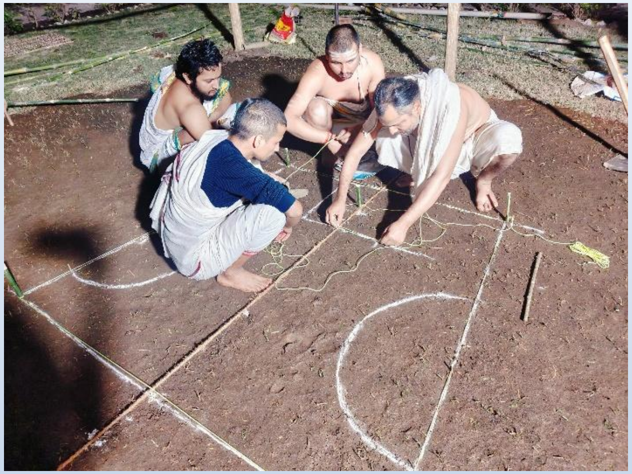

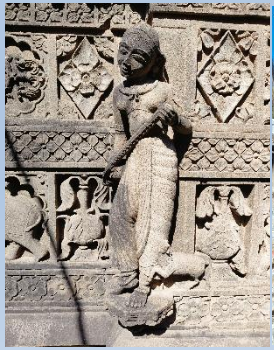

राष्ट्रिया संगोष्ठी

दिनाङ्कः – ०२/०५/२०२५

प्रपत्रम् - C:\Users\jnane\OneDrive\Desktop\sangoshthi 2 5 2025\SANGOSHTHI KAARYAVRITT.pdf

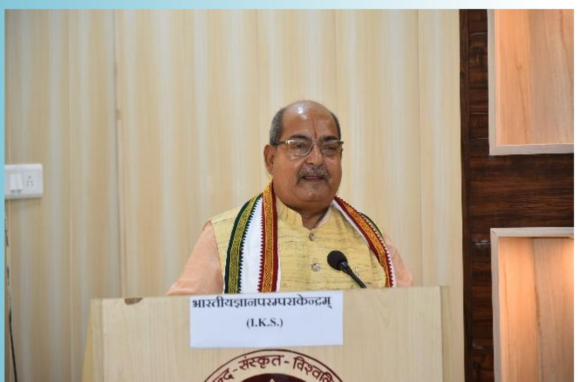

हिन्दुस्तान www.livehindustan.com अपना बनारस

जयंती पर संस्कृत विश्वविद्यालय में संगोष्ठी का आयोजन, वक्ताओं ने परमात्मा की सत्ता के अनुसार लोक व्यवहार पर दिया जोर

आदि शंकराचार्य ने पूरे देश को एक सूत्र में बांधा

किया नमन

'ब्रह्म परम सत्य और जगत मिथ्या', का संदेश दिया

संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में आदि शंकराचार्य जयंती समारोह के दौरान आईकेएस शोधकर्ताओं को दिए गए प्रमाण पत्र।

वेदों में जों ज्ञान तत्त्व निहित है वही तत्त्व सभी शास्त्रों में विहित है

राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
प्रातःकाल एक्सप्रेस

वेदों में सत्ता वर्णन और लोक में व्यवहारः प्रो. हृदय रंजन

संगोष्ठी

संपूर्णानंद में आदि शंकराचार्य जयंती समारोह के अंतर्गत 'शास्त्रेषु परमतत्व स्वरूप विमर्श' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी

पौर्णमासेष्टिः

दिनाङ्कः – २३/०४/२०२५

अनुसन्धानयोजना

- भारतेऽस्माकं शुल्बशास्त्रविषयका नैकाः पाण्डुलिपयः तत्तत्स्थलेषु पुस्तकालयेषु वर्तन्ते। ता आधारीकृत्यानेकग्रन्थाः तत्तत्काले प्रकाशिताः। तासां पाण्डुलिपीनां प्रकाशितानां ग्रन्थानाञ्च सङ्ग्रहः एकं महत्कार्यं भविष्यति।
- सङ्ग्रहीतानां पाण्डुलिपीनां प्रकाशितानाञ्च ग्रन्थानां समीक्षात्मकमध्ययनम्।
- अप्रकाशितपाण्डुलिपीनामनुलेखनम्।
- पाठभेदसङ्कलनपूर्वकं सम्पादनम्।
- सम्प्राप्तटीकाग्रन्थानामेकत्रीकृत्य सम्पादनम्।
- सम्पादितानां प्रकाशनम्।

दृष्टिज्ञानलौकिकप्रयोजनेषु परियोजनायोगदानम्

• दृष्टिः

वैदिकजीवनपद्धतौ समुपलभ्यमानायाः शिल्पच्छटायाः चितिमाध्यमेनाखण्डपरम्पराया दर्शनं कर्तुं शक्यते। तस्यां दिशि इष्टकाचयनप्सदृशग्रन्थानामुद्धारः केन्द्रस्य दृष्टौ वर्तते।

• ज्ञानम्

शुल्बशास्त्रं भारतीयगणितस्याप्रतिमं स्रोतः। तदीयगणना यद्यपि यागीयशालास्तम्भवेदिचित्यादिविषयैव। तथापि साम्प्रतमपि कतिपयजनाभ्यासविषयम्। एतादृशज्ञानस्य प्रकाशनाय शुल्बादिग्रन्थानां तद्भाष्याणाञ्च सम्पादनसमीक्षादिकार्यं भारतीयज्ञानसम्पदायाः समृद्धिं करिष्यति।

• लौकिकप्रयोजनम्

भारतीयशुल्बज्ञानं प्रत्यक्षतः वैदिकानुष्ठानकर्तॄन् प्रयोजयति। अथापि वैदिकसंस्कृतेरध्ययनकर्तृभ्यः तदीयप्रायोगिकस्वरूपमत्यन्तमुपकरिषियति। अनेन बालानां प्रौढानां च प्रायोगिकगणितज्ञानां ज्ञानसमृद्धिं करिष्यति।

भविष्यत्कार्यायावसरः

१. पाण्डुलिपिसंग्रहे इदानीमप्यप्रकाशिताः पाण्डुलिपयः प्रकाशनमर्हन्ति।

२. कात्यायनशुल्बानुसारं चतुरस्रसुपर्णचितेः काष्ठप्रतिकृतिनिर्माणम्। सकलेष्टकानां संख्या - ११५००, निर्मिताः - ११५००।

३. वास्तविकमानानुसारं काष्ठेष्टकानिर्माणम्।

४. कात्यायनशुल्बानुसारं चतुरस्रसुपर्णचितेः १४ प्रकारकाणां वास्तविकेष्टकानां निर्माणम्। आबन्धनिर्माणम्।

व्यय विवरण

स्वीकृत धनराशि ३५,८०,०००

प्रथम किश्त – १८,७०,०००/-

द्वितीय किश्त से प्राप्त – ११,६१,१३८/-

आहत्य प्राप्त – ३०,३१,१३८/-

गत वर्ष व्यय – २९,११,२३४/-

शेष – १,१९,९०४/-

द्वितीय किश्त शेष = ५,४८,८६२/-

Proposed Project Budget: Rs. 5,00,000/- per year

वर्ष-२०२५-२०२६			
१.वेतन	१ अनुसन्धान सहायक	(३१,०००x१)x१२=	३,७२,०००/-
	६ प्रशिक्षु	(५०००x६) x१=	३०,०००/-
२.उपकरण सुविधाएं	अलमारी, कुर्सी, टेबल, पुस्तक तथा हस्तलेखादि		१०,०००/-
३.शिक्षा/परामर्श/आउटरीच			१८,०००/-
4.यात्रा/कन्फ्रेन्स			५०,०००/-
5.काण्टिन्जेन्सी			१०,०००/-
6.ऑवरहेड			१०,०००/-
योग- ५,००,०००/- पांच लाख रुपये मात्र			

वर्ष- २०२६-२०२७			
१.वेतन	१ अनुसन्धान सहायक	(३१,०००x१)x१२=	३,७२,०००/-
	६ प्रशिक्षु	(५०००x६) x१=	३०,०००/-
२.उपकरण सुविधाएं	अलमारी, कुर्सी, टेबल, पुस्तक तथा हस्तलेखादि		१०,०००/-
३.शिक्षा/परामर्श/आउटरीच			१८,०००/-
4.यात्रा/कन्फ्रेन्स			५०,०००/-
5.काण्टिन्जेन्सी			१०,०००/-
6.ऑवरहेड			१०,०००/-
योग- ५,००,०००/- पांच लाख रुपये मात्र			

भारतीय ज्ञान परंपरा

॥ भद्रायां सुमतौ यतेम ॥

धन्यवादः

INDIAN KNOWLEDGE SYSTEMS